डॉ० अनिल कुमार प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रश्न : पंत प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: कवि पंत छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। सौभाग्यवश उन्हें बचपन से ही प्रकृति को निकट से देखने का अवसर मिला। प्रकृति ही अपने सौंदर्य से उनका जीवन संवारती चली गयी। उन्हें प्रकृति का अनुपम एवं स्वच्छंद वातावरण मिला, जिसके कारण प्रकृति-प्रेम रग-रग में समाया हुआ था। स्वयं कवि ने स्वीकार किया है — "मेरे भीतर ऐसे संस्कार अवश्य रहे होंगे जिन्होंने मुझे कवि-कर्म करने की प्रेरणा दी, किंतु उस प्रेरणा के विकास के लिए सपनों के पालने की रचना पर्वत-प्रदेश की निसर्ग छवि प्राकृतिक शोभा ही ने की, जिसने बचपन से मुझे अपने रुपहले एकांत में एकाग्र तन्मयता के रश्मिदोल में मुझे झुलाया, रिझाया तथा कोमल कंठ वन पाखियों के साथ बोलना-कुहकना सिखाया। प्रकृति-प्रेम मेरे स्वभाव के अभिन्न अंग ही बन गए हैं, जिनसे मुझे जीवन के अनेक संकट क्षणों में अमोघ शक्ति मिली है।

पंत को प्रकृति में सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने की कला उन्हें उन्हें प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में स्थान दिलाती है। भावना के सूक्ष्म तारों को झंकृत करने में पंत जी समर्थ हैं। उन्हें प्रकृति से प्रेम ही नहीं सामीप्य और साहचर्य भी प्राप्त है। अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ के विषय में एक आलोचक का कथन है — "ऐसा जान पड़ता है कि प्रकृति स्वयं कवि के लिए अपने सुंदर शब्दों से कविता लिखती है।" पंत के विषय में यह कथन सर्वथा उचित प्रतीत होता है। सूक्ष्म भावों के साथ संगीत की कोमल तरंगें सप्राणता के साथ पंत की कविताओं में देखने को मिलते हैं।

कवि पंत की मूल प्रेरणा प्रकृति का चित्रण है। वे प्रकृति को माँ, सहचरी और प्रेयसी के रूप में देखते हैं, क्योंकि कवि उसी के साथ नाना-क्रीड़ायें करता है। प्रकृति-माता को उन्होंने बालिका के रूप में चित्रित भी किया है। अपने प्रथम 'वीणा' में प्रकृति को उन्होंने बालिका के रूप में देखा है। प्रकृति का सम्मोहन उनपर इतना गहरा है कि नारी रूप का सहज आकर्षण भी उन्हें प्रभावित नहीं कर पाता है। वह स्वयं कहते हैं —

P.T.O
P.T.O

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले, तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?

कवि की काव्य-साधना नवीन प्रभात किरणों की तरह है जो धीरे-धीरे प्रखर होकर तेजवान हो उठती है। पंत जी ने 'वीणा' में जिस बालिका को देखा था वह अब तरुणी हो जाती है। तरुण जीवन का प्रेम प्रकृति को भी अपने रंग में रंगने लगता है। प्रकृति किसी अज्ञात सौंदर्य से कभी कवि को प्रेम संदेश सुनाती है तो कभी मौन निमंत्रण देती है। प्रकृति और पुरुष न केवल परम पुरुष को ही रिझाने के लिए ही उषा और संध्या के रूप में अवतरित होते हैं। वरन् वह अपने मादक मोहक रूप से मानव को भी मुग्ध करते हैं। प्रकृति के अंग-प्रत्यंग में भुवन-मोहन चित्रकार की कुशल कला का दर्शन करना और मानव-हृदय का संपूर्ण प्रकृति से तादात्म्य अनुभूत करना ही छायावादी काव्य की विशेषता है। प्रकृति केवल उद्दीपन नहीं, आलंबन भी है। इस विशेषता को हम कवि पंत की कविताओं में खोज सकते हैं। 'पल्लव' काव्य में इस सुंदर दृश्य को देखा जा सकता है —

नभ से विलोकती उषा
तुमको क्या तारागण से
कोंपलें उतारा फिर जाती है
सूने घर के आँगन में।

प्रकृति के इस सौंदर्यात्मक जगत में कवि इस स्वरूप का दर्शन करता है। वन, उपवन, नदी-निर्झर, अनंत आकाश सब में किसी का सौंदर्य है। कवि भाव-विभोर होकर अपने कोमल प्राणों का तीव्र उच्छ्वासमयी अखिल माधुर्य, लय, छंद के साथ मुक्त कर देता है।

प्रकृति में मानवी भावों का आरोप और उसकी माधुरी और सुषमा में ईश्वरीय संकेत पाना, यह प्रवृत्ति ही छायावाद को रहस्यवाद से जोड़ देती है। प्रकृति ही ब्रह्म की व्यक्त सत्ता है और इसी व्यक्त में अव्यक्त के दर्शन होते हैं। प्रकृति के दर्शन ने ही कवि को दार्शनिक बना दिया है। 'परिवर्तन' काव्य में अनित्य जग में नित्यता और नित्यता में अनित्यता का पाठ पढ़ाती है। प्रकृति ही कवि की प्रेरिका, पथ-प्रदर्शिका एवं संदेशवाहिनी है। प्रकृति परमपुरुष की वधू है, प्रिया है इस भावना की पुष्टि सांख्य दर्शन में भी होती है। प्रकृति ही सारी सृष्टि की अधिष्ठात्री है।

पंत की यही विशेषता है कि उन्हें प्रकृति का स्त्री रूप पसंद है। उषा, संध्या, लहर, किरण सब में नारीत्व का आरोप है। नारी में किशोरी बाला रूप या मुग्धा रूप ही उन्हें ज्यादा प्रिय है। इस प्रवृत्ति का फल यह हुआ है कि कवि सर्वत्र नारी रूप में ही प्रकृति निरखता दिखलाई पड़ती है। जिस शृंगारी कविता का उन्होंने विरोध किया था और जिस रीतिकाल की उन्होंने निन्दा की थी 'पल्लव' के प्रवेश में उन्होंने प्रकृति की छायाएँ, अनंग कल्पना-कुमारियाँ और मदमाती युवतियाँ प्रस्तुत हैं। प्रणय सूक्ष्म होकर अनंग हो गया है। मधुप भी मधुबाला है, निर्झरी शैलबाला और विहंगिनी विहगबाला हो जाती है। प्रकृति को प्रिया के रूप में चित्रित करने की यह प्रवृत्ति 'पल्लव' में अतिशय मात्रा में वर्तमान है।

पंत में नारी सुलभ भावनात्मक कोमलता अधिक है। उनकी यही कोमलता उनके काव्य के भाषा में ही नहीं भावना, कल्पना और उनके जीवन में भी व्यक्त हुई है। अपने इसी सहज-भाव के कारण पंतजी को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है।

U.G. B.A. Part-I
(Hindi Hons) Paper-I